श्री साथनो प्रबोध–राग धनाश्री

इस प्रकरण में सब सुन्दरसाथजी को कैसे रहनी में रहना है, श्री राजजी महाराज ने सिखापन (शिक्षा) दिया है।

संभारो साथ, अवसर आव्यो छे हाथ जी।
आप नाख्या जेम पेहेले फेरे, वली नाखजो एम निघात जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! याद करो, यह सुन्दर मौका अपने को मिला है। पहली बार में जब ब्रज से रास में जाते समय संसार को हमने खड़े-खड़े छोड़ दिया था, उसी तरह से दृढ़ता के साथ इस बार भी छोड़ देना।

सुन्दरबाई आपण माटे, आव्या छे आणी वार जी।
ए आपणने अलगां नव करे, कांई मोकल्या छे प्राण आधार जी।। २ ।।

इस बार श्यामाजी (सुन्दरबाई) अपने वास्ते यहां पर आई हैं। वह अपने को कभी भी हमसे अलग नहीं करेंगी, क्योंकि श्री राजजी महाराज ने इनको भेजा है।

सपनातरमां खिणनव मूके, तो साख्यात अलगां केम थायजी।
कृपा वालाजीनी केही कहूं, जो जुए जीव रुदया मांहें जी।। ३ ।।

सपने में भी (ब्रज में) वालाजी ने एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ा तो अब साक्षात् में कैसे अलग हो सकेंगे? (अब हमारे पास तारतम वाणी से उनकी पहचान है, जो ब्रज में नहीं थी) हृदय से विचारें तो वालाजी की कृपा अपार है। यह वर्णन से परे है, जो जीव मन में विचारे।

एवडी वात वालो करे रे आपणसूं, पण नथी कांई साथने सार जी।
भरम उडाडी जो आपण जोइए, तो बेठा छे आपणमां आधार जी।। ४ ।।

वालाजी हमारे ऊपर मेहरबान हैं और ऐसी कृपा करते हैं, किन्तु सुन्दरसाथ को इसकी खबर नहीं है। अपने संशय दूर करके देखें तो श्री राजजी महाराज अपने बीच में ही बैठे हैं।

सपनातरमां मनोरथ कीधां, तो तिहां पण वालोजी साथ जी।
सुंदरबाई लई आवेस धणीनो, नव मूके आपणो हाथ जी।। ५ ।।

सपने में (ब्रज में) हमने इच्छा की थी। वहां पर भी धाम धनी अपने साथ में थे। अब श्यामाजी (सुन्दरबाई) धनीजी के आवेश के साथ आई हैं और हमारा हाथ अब नहीं छोड़ेंगी।

तिलमात्र दुख नव दिए आपणने, जो जोइए वचन विचारी जी।
दुख आपणने तोज थाय छे, जो संसार कीजे छे भारी जी।। ६ ।।

हम विचार करके देखें तो थोड़ा-सा भी दुःख वालाजी नहीं देते हैं। हम तभी दुःखी होते हैं, जब हम माया को अच्छा समझते हैं। (चाहना राजजी की तरफ नहीं होती)

अंतरध्यान समे दुख दीधां, ए आसंका मन मांहें जी।
एणे समे संसार भारी नव कीधूं, साथें दुख दीठां एम कांए जी।। ७ ।।

एक आशंका सब सुन्दरसाथजी के मन में आती है कि रास की लीला में हमें माया की चाह नहीं थी, तो फिर अन्तर्ध्यान के समय विरह का दुःख क्यों दिखाया गया?

दुखतां केमे न दिए रे वालोजी, ए तां विचारीने जोइए जी।
सांभरे वचन तोज रे सखियो, जो माया मूकतां घणूं रोइए जी।। ८ ।।

वालाजी तो हमको किसी तरह से भी दुःख नहीं देते हैं। जरा विचार करके देखो। यह वचन तभी याद आते हैं, जब हम माया छोड़ते समय दुःख महसूस करते हैं।

Nijanand App

वचन संभारवा ने काजे मारे वाले, दुख दीधां अति घणां जी।
आपण मनोरथ एहज कीधां, वाले राख्या मन आपणां जी।। ९ ।।

इन वचनों को याद दिलाने के वास्ते ही हमने दुःख की मांग की थी। वालाजी ने हमारा मन रखने के लिए ही विरह का दुःख दिखाया था।

आपण माया नी होंसज कीधी, अने माया तो दुख निधान जी।
ते संभारवाने काजे रे सखियो, वालो पाम्या ते अंतरध्यान जी।। १० ।।

हमने उमंग से माया देखने की चाहना की थी, माया तो दुःख का ही रूप है। उसे याद दिलाने के लिए ही हे सुन्दरसाथजी! वालाजी अन्तर्ध्यान हुए थे।

नहीं तो अधखिण ए रे आपणों, नव सहे विछोह जी।
ए तां विचारीने जोइए रे सखियो, तो तारतम भाजे संदेह जी।। ११ ।।

नहीं तो आधे पल के लिए भी हमारी जुदाई वालाजी सहन नहीं करते। यह विचार करके देखो तो तारतम वाणी से सब संशय मिट जाते हैं।

एणे समे तारतमनी समझण, ते में केम केहेवाय जी।
अनेक विधनूं तारतम इहां, तेणे घर लीला प्रगट थाय जी।। १२ ।।

इस समय तारतम को ही समझना है। मैं कैसे कहूं? क्योंकि संसार में अनेक प्रकार के ज्ञान हैं, जो घर का ज्ञान तो देते हैं, पर सब संसार में ही घटा देते हैं। तारतम वाणी के बिना घर की पहचान नहीं होती है।

ओलखवाने धणी आपणो, कहूं तारतम विचार जी।
साथ सकल तमे ग्रहजो चितसूं, नहीं राखूं संदेह लगार जी।। १३ ।।

अपने धनी की पहचान कराने के लिए सब ज्ञान का सार लेकर तारतम का महत्व बतलाती हूं। हे साथजी! तुम चित्त से ग्रहण करना। मैं सब संशय मिटा डालूंगी।

पेहेले फेरे तां ए निध न हुती, अजवालूं तारतम जी।
तो आ फेरो थयो आपणने, साथ जुओ विचारी मन जी।। १४ ।।

पहली बार (ब्रजरास में) में तारतम वाणी का ज्ञान (धनी की पहचान) नहीं था, इसलिए हे सुन्दरसाथजी! मन से विचार करके देखो तो यही कारण था जो दुबारा हमको खेल में आना पड़ा।

उत्कंठा नव रहे रे केहेनी, जो कीजे तारतम नो विचार जी।
तारतमतणूं अजवालूं लईने, आव्या आपणमां आधार जी।। १५ ।।

यदि तारतम का विचार करके देखो तो किसी की चाहना बाकी नहीं रहेगी। श्री राजजी महाराज तारतम के स्वरूप में ही हमारे बीच में आए हैं। (तारतम का ज्ञान लेकर आए हैं)

एणे अजवाले जो न ओलख्या, तो आपणमां अति मणां जी।
चरणे लागी कहे इंद्रावती, वालो नव मूके गुण आपणां जी।। १६ ।।

इस ज्ञान की रोशनी में भी आपने नहीं पहचाना तो यह अपनी कमी है। (अपने सिर दोष होगा) श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि (हमारी इतनी बड़ी भूल पर भी) वालाजी फिर भी अपने ऊपर मेहरबान हैं। वह अपनी मेहर (कृपा) करने के गुण को नहीं छोड़ते।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ २० ॥

Nijanand App